Prijs franco per post f_____

Verkrijgbaar op het Dépôt van Leermiddelen te Weltevreden tegen toezending van een postwissel ter genoemd bedrag.

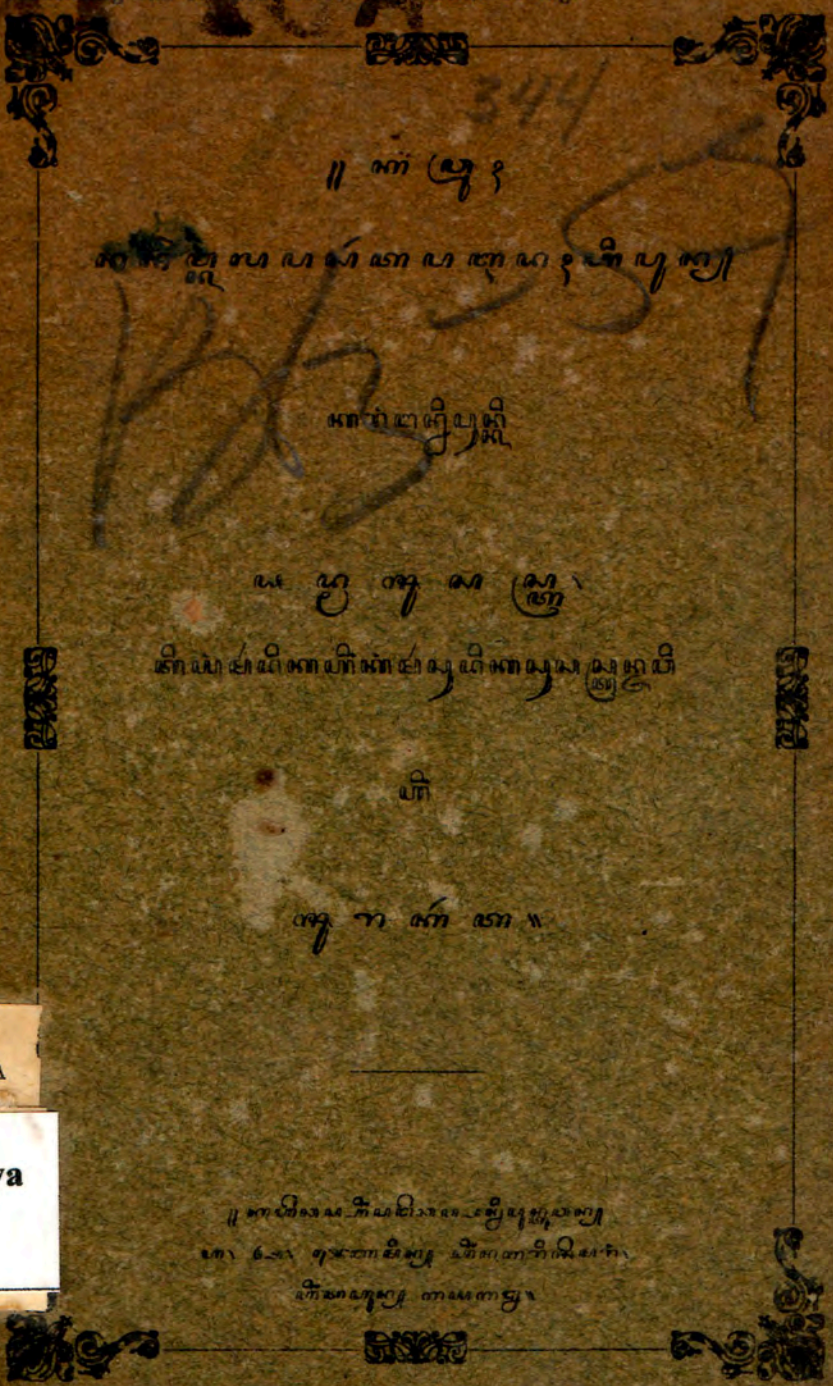

AMANSISWA
KIRTI GRIYA

AAN
Kirti Griya
5

KAWRUH NANEM KLOPO SARTO PAEDAHIPUN

- Ki Padmosusastro
- H.A. Benyamins
- Semarang
- 1912
- 14x22,5 cm
- 1-46

Bb.1. 015

B 36 344 1

Serie uitgaven door bemiddeling der Commissie voor de
Volkslectuur No. 23.

ꦲꦤꦏ꧀ꦱꦺꦴꦂꦒ

ꦲꦤꦶꦩꦱ꧀ꦩꦫꦤꦏꦺꦴꦂꦒꦤꦶꦱꦤꦏꦺꦴꦂꦒꦤꦶꦱꦤꦏꦺꦴꦂꦒꦤꦶꦱ

B 36 3

KAWROEH KALAPA

DOOR

KI PADMA SOESASTRA

TE

SOERAKARTA.

Semarang-Drukkerij en Boekhandel
H. A. Benjamins, Semarang.
1912.

Beekee seiwan adja diloeliet
Jan matja era kena dilekoek

" " "

| | | |

ཀིཀིའི། ཨ་ཡ་ཀ་ཀི་ཀུ་ཀ་ཨ་ཀིཀ་ཀུ་ཀ་ཨ་ཀིཀ་ཨ་ཡ་ཀ་ཨ་ཀིཀ་ཨ་ཡ་ཀ་ཨ་ཀིཀ་ཨ་ཡ

[illegible] Skr. [illegible] [illegible] [illegible]

ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಅಂಗಡಿಯವನು ಮಾಲಿನ ಬೆಲೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದಾಗ ಅದರಲ್ಲಿ ಸ್ವಲ್ಪ ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಿಸಿ ಕೊಳ್ಳುವುದು ಸಂಪ್ರದಾಯವಾಗಿದೆ. ಆದರೆ ಕೆಲವು ಅಂಗಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಲಿನ ಬೆಲೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದಾಗ ಅದರಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದರೆ (ಅಂಗಡಿಯವನಿಗೆ) ಅಪಮಾನವಾಗುವುದು. ಅಂಥ ಅಂಗಡಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಾಲಿನ ಬೆಲೆಯನ್ನು ಹೇಳಿದಾಗ ಅದರಲ್ಲಿ ಕಡಿಮೆ ಮಾಡಿಸಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸಿದರೆ ಅಂಗಡಿಯವನಿಗೆ

॥ श्रीमद्भागवतम् ॥

श्रीमद्भागवतं पुराणममलं यद्वैष्णवानां प्रियं
यस्मिन्पारमहंस्यमेकममलं ज्ञानं परं गीयते ।
तत्र ज्ञानविरागभक्तिसहितं नैष्कर्म्यमाविष्कृतं
तच्छृण्वन्सुपठन्विचारणपरो भक्तिप्रमुक्तो भवेत् ॥ १ ॥

नमस्तस्मै भगवते वासुदेवाय साक्षिणे ।
पुरुषायादिबीजाय पूर्णबोधाय तेजसे ॥ २ ॥

यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु-
स्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥ ३ ॥

यः स्वानुभावमखिलश्रुतिसारमेक-
मध्यात्मदीपमतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ।
संसारिणां करुणयाऽऽह पुराणगुह्यं
तं व्याससूनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम् ॥ ४ ॥

मुनयः साधु पृष्टोऽहं भवद्भिर्लोकमङ्गलम् ।
यत्कृतः कृष्णसम्प्रश्नो येनात्मा सुप्रसीदति ॥ ५ ॥

सूत उवाच ।
यं प्रव्रजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव ।
पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु-
स्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि ॥ ६ ॥

यः स्वानुभावमखिलश्रुतिसारमेक-
मध्यात्मदीपमतितितीर्षतां तमोऽन्धम् ।
संसारिणां करुणयाऽऽह पुराणगुह्यं
तं व्याससूनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम् ॥ ७ ॥

मुनयः साधु पृष्टोऽहं भवद्भिर्लोकमङ्गलम् ।
यत्कृतः कृष्णसम्प्रश्नो येनात्मा सुप्रसीदति ॥ ८ ॥

. . . . . .

*) [illegible] 45-46.

ရေးသားပြုစုခဲ့ကြသော ကျမ်းဂန်များ (သို့မဟုတ်) စာပေလက်ရာများကို ဆိုလိုသည်။ ဤသို့ ရေးသားပြုစုခဲ့ကြသော ကျမ်းဂန်များ (သို့မဟုတ်) စာပေလက်ရာများသည် ပုဂံခေတ်ကာလ ရှေးဟောင်းမြန်မာစာပေ ဖြစ်ကြသည်။ ပုဂံခေတ်ကာလ ရှေးဟောင်းမြန်မာစာပေများသည် ပုဂံခေတ်ကာလ ရှေးဟောင်းမြန်မာတို့ ရေးသားပြုစုခဲ့ကြသော ကျမ်းဂန်များ (သို့မဟုတ်) စာပေလက်ရာများ ဖြစ်သည်။ ပုဂံခေတ်ကာလ ရှေးဟောင်းမြန်မာတို့ ရေးသားပြုစုခဲ့ကြသော ကျမ်းဂန်များ (သို့မဟုတ်) စာပေလက်ရာ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ପ୍ରଥମ ଅଧ୍ୟାୟ ଶେଷ ହେଲା ।

ଦ୍ୱିତୀୟ ଅଧ୍ୟାୟ

ଏହି ଅଧ୍ୟାୟରେ ଦୁଇଟି ଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଉପ-ଉପଭାଗରେ ଦୁଇଟି ଉପ-ଉପଭାଗ ଅଛି ।

zie

M. L. 329 — 4

ولا يجوز أن يكون الضمير في قوله تعالى: ﴿ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ﴾ [النجم: 8] لجبريل عليه السلام، لأن جبريل عليه السلام لم يزل عند سدرة المنتهى، وإنما يجوز أن يكون الضمير لله تعالى، أي: دنا بقدرته وعلمه، وتدلى بأمره ونهيه، وهذا كما يقال: نزل الخليفة بالبصرة، وإنما نزل أمره ونهيه، وكما يقال: جاء الملك، وإنما جاء أمره ونهيه، وكما يقال: ضرب الأمير اللص، وإنما ضرب غلمانه، وكما يقال: بنى الأمير المدينة، وإنما بنى غلمانه، وكما يقال: فتح الأمير البلد، وإنما فتح غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير العدو، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: هزم الأمير الجيش، وإنما هزم غلمانه، وكما يقال: أسر الأمير العدو، وإنما أسر غلمانه، وكما يقال: غنم الأمير المال، وإنما غنم غلمانه، وكما يقال: أخذ الأمير الخراج، وإنما أخذ غلمانه، وكما يقال: جبى الأمير الخراج، وإنما جبى غلمانه، وكما يقال: ولى الأمير القاضي، وإنما ولى غلمانه، وكما يقال: عزل الأمير القاضي، وإنما عزل غلمانه، وكما يقال: حبس الأمير اللص، وإنما حبس غلمانه، وكما يقال: أطلق الأمير اللص، وإنما أطلق غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد اللص، وإنما قطع غلمانه، وكما يقال: صلب الأمير اللص، وإنما صلب غلمانه، وكما يقال: رجم الأمير الزاني، وإنما رجم غلمانه، وكما يقال: جلد الأمير الزاني، وإنما جلد غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير القاتل، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد السارق، وإنما قطع غلمانه، وكما يقال: صلب الأمير اللص، وإنما صلب غلمانه، وكما يقال: رجم الأمير الزاني، وإنما رجم غلمانه، وكما يقال: جلد الأمير الزاني، وإنما جلد غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير القاتل، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد السارق، وإنما قطع غلمانه.

8 || وأما قوله تعالى: ﴿ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ﴾ [النجم: 8] || فإن معناه: دنا بقدرته وعلمه، وتدلى بأمره ونهيه، وهذا كما يقال: نزل الخليفة بالبصرة، وإنما نزل أمره ونهيه، وكما يقال: جاء الملك، وإنما جاء أمره ونهيه، وكما يقال: ضرب الأمير اللص، وإنما ضرب غلمانه، وكما يقال: بنى الأمير المدينة، وإنما بنى غلمانه، وكما يقال: فتح الأمير البلد، وإنما فتح غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير العدو، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: هزم الأمير الجيش، وإنما هزم غلمانه، وكما يقال: أسر الأمير العدو، وإنما أسر غلمانه، وكما يقال: غنم الأمير المال، وإنما غنم غلمانه، وكما يقال: أخذ الأمير الخراج، وإنما أخذ غلمانه، وكما يقال: جبى الأمير الخراج، وإنما جبى غلمانه، وكما يقال: ولى الأمير القاضي، وإنما ولى غلمانه، وكما يقال: عزل الأمير القاضي، وإنما عزل غلمانه، وكما يقال: حبس الأمير اللص، وإنما حبس غلمانه، وكما يقال: أطلق الأمير اللص، وإنما أطلق غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد اللص، وإنما قطع غلمانه، وكما يقال: صلب الأمير اللص، وإنما صلب غلمانه، وكما يقال: رجم الأمير الزاني، وإنما رجم غلمانه، وكما يقال: جلد الأمير الزاني، وإنما جلد غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير القاتل، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد السارق، وإنما قطع غلمانه.

7 || وأما قوله تعالى: ﴿وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ﴾ [الأنفال: 17] || فإن معناه: ما رميت بقوتك وقدرتك، ولكن الله رمى بقوته وقدرته، وهذا كما يقال: ضرب الأمير اللص، وإنما ضرب غلمانه، وكما يقال: بنى الأمير المدينة، وإنما بنى غلمانه، وكما يقال: فتح الأمير البلد، وإنما فتح غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير العدو، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: هزم الأمير الجيش، وإنما هزم غلمانه، وكما يقال: أسر الأمير العدو، وإنما أسر غلمانه، وكما يقال: غنم الأمير المال، وإنما غنم غلمانه، وكما يقال: أخذ الأمير الخراج، وإنما أخذ غلمانه، وكما يقال: جبى الأمير الخراج، وإنما جبى غلمانه، وكما يقال: ولى الأمير القاضي، وإنما ولى غلمانه، وكما يقال: عزل الأمير القاضي، وإنما عزل غلمانه، وكما يقال: حبس الأمير اللص، وإنما حبس غلمانه، وكما يقال: أطلق الأمير اللص، وإنما أطلق غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد اللص، وإنما قطع غلمانه، وكما يقال: صلب الأمير اللص، وإنما صلب غلمانه، وكما يقال: رجم الأمير الزاني، وإنما رجم غلمانه، وكما يقال: جلد الأمير الزاني، وإنما جلد غلمانه، وكما يقال: قتل الأمير القاتل، وإنما قتل غلمانه، وكما يقال: قطع الأمير يد السارق، وإنما قطع غلمانه.

---

(1) ما يجوز.

ཡིན་ཏེ། ཁོ་ཚོས་ཁོ་ཚོའི་ཁྱིམ་ཚང་ཁྲོད་ཀྱི་ཁྱིམ་བདག་ཁ་ཅིག་ལ

ما ذكرناه في الأمثلة السابقة من أن الفعل المضارع يدل على الحال والاستقبال، وأن الفعل الماضي يدل على الزمن الذي قبل زمن التكلم، وأن الفعل الأمر يدل على الطلب في الزمن المستقبل.

وهذه الأفعال الثلاثة (الماضي والمضارع والأمر) هي التي تسمى الأفعال المتصرفة، لأنها تتصرف بتغير صيغها لتدل على الزمن الذي تدل عليه.

وهناك أفعال أخرى لا تتصرف، أي لا تتغير صيغها لتدل على الزمن، بل تدل على الزمن بدون تغير في صيغتها، وهي أفعال قليلة، مثل: ليس، وعسى، ونعم، وبئس، وفعل التعجب.

فليس تدل على النفي في الزمن الماضي، وعسى تدل على الرجاء في الزمن المستقبل، ونعم تدل على المدح في الزمن الماضي، وبئس تدل على الذم في الزمن الماضي، وفعل التعجب يدل على التعجب في الزمن الماضي.

وهذه الأفعال لا تتغير صيغها لتدل على الزمن، بل تدل عليه بصيغتها الثابتة.

ومن الأفعال ما يدل على الزمن بصيغته، ومنها ما يدل عليه بقرينة، ومنها ما يدل عليه بالسياق.

فالفعل الماضي يدل على الزمن الماضي بصيغته، والفعل المضارع يدل على الحال والاستقبال بصيغته، والفعل الأمر يدل على الطلب في الزمن المستقبل بصيغته.

وقد يدل الفعل المضارع على الماضي بقرينة، كقولك: كان زيد يقوم أمس، فالفعل يقوم مضارع ولكنه دل على الماضي بقرينة أمس.

وقد يدل الفعل المضارع على الاستقبال بقرينة، كقولك: سوف يقوم زيد غدا، فالفعل يقوم مضارع ولكنه دل على الاستقبال بقرينة سوف وغدا.

وقد يدل الفعل الماضي على الاستقبال بقرينة، كقولك: إن قام زيد قمت، فالفعل قام ماض ولكنه دل على الاستقبال بقرينة إن الشرطية.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد قائم، فالفعل قائم اسم فاعل ولكنه دل على الحال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الاستقبال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب أمس، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الماضي بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب غدا، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الاستقبال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب الآن، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الحال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل يوم، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الحال والاستقبال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل أمس، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الماضي بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل غد، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الاستقبال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل الآن، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الحال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل يوم أمس، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الماضي بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل يوم غد، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الاستقبال بالسياق.

وقد يدل الفعل على الزمن بالسياق، كقولك: زيد ذاهب كل يوم الآن، فالفعل ذاهب اسم فاعل ولكنه دل على الحال بالسياق.

b.

12

ומה שכתב, שיכולים לומר שהם מחמת שהיו מתפללים בבית הכנסת שהיה מקום הקדושה, אין זה מספיק, שהרי גם בבית הכנסת שהיה מקום הקדושה היו מתפללים בכוונה ובלי כוונה, ואם כן מה שהיו מתפללים בבית הכנסת שהיה מקום הקדושה לא היה מועיל להם שיתפללו בכ

[illegible]

16 [illegible] [1] [illegible]

a. [illegible] [2] [illegible]

---

[1] [illegible]

[2] [illegible]

ומה שאמרו ז"ל שהיה מתפלל בכל יום שמונה עשרה ברכות ובשבת ויום טוב שבע ברכות ובראש חודש חמש ברכות ובתענית ג' ברכות ובנעילה ד' ברכות ובמוסף ז' ברכות ובמנחה ג' ברכות ובמעריב ג' ברכות ובקריאת שמע ג' ברכות ובברכת המזון ג' ברכות ובברכת המזון של יום טוב ג' ברכות ובברכת המזון של ראש חודש ג' ברכות ובברכת המזון של שבת ג' ברכות ובברכת המזון של תענית ג' ברכות ובברכת המזון של נעילה ג' ברכות ובברכת המזון של מוסף ג' ברכות ובברכת המזון של מנחה ג' ברכות ובברכת המזון של מעריב ג' ברכות ובברכת המזון של קריאת שמע ג' ברכות ובברכת המזון של ברכת המזון ג' ברכות

b. ומה שאמרו ז"ל שהיה מתפלל בכל יום שמונה עשרה ברכות ובשבת ויום טוב שבע ברכות ובראש חודש חמש ברכות ובתענית ג' ברכות ובנעילה ד' ברכות ובמוסף ז' ברכות ובמנחה ג' ברכות ובמעריב ג' ברכות ובקריאת שמע ג' ברכות ובברכת המזון ג' ברכות ובברכת המזון של יום טוב ג' ברכות ובברכת המזון של ראש חודש ג' ברכות ובברכת המזון של שבת ג' ברכות ובברכת המזון של תענית ג' ברכות ובברכת המזון של נעילה ג' ברכות ובברכת המזון של מוסף ג' ברכות ובברכת המזון של מנחה ג' ברכות ובברכת המזון של מעריב ג' ברכות ובברכת המזון של קריאת שמע ג' ברכות ובברכת המזון של ברכת המזון ג' ברכות

[illegible]

17 [illegible]

[illegible]

18 [illegible]

zie T. Tj. 14-3 v. o. en 16-9 v. o.

verk. v.

19

a.

b.

c.

d.

20 K. N.

a.

(1)

(1)

b. ကောလာဟလဖြစ်ကြောင်းကို ပြောပြပါ။

c. ကောလာဟလဖြစ်ကြောင်းကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

d. ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

e. ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

f. ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

g. ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

h. ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

i. ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကျိုးဆက်များကို ပြောပြပါ။ ကောလာဟလဖြစ်ခြင်း၏ အကြောင်းရင်းများကို ပြောပြပါ။

j. ကောလာကောက်ပဲ (ကောက်) ကောလာပဲကိုကောက်ပဲကောက်ပဲကောက်ပဲ

ကောင်းကင်ဘုံသို့ ကြွတော်မူသည်ကို ကြည့်ရှုနေကြစဉ် ရုတ်တရက် ဝတ်လုံဖြူ ဆင်ယင်ထားသော
လူနှစ်ယောက် ရောက်လာကြ၍ [1]

၂ ဂလိလဲပြည်သားတို့

23 a. b.

[illegible]

[illegible]

24 [illegible] (§ 23 lett. a) [illegible]

[illegible]

a [illegible]

b " [illegible]

c " " [illegible]

[illegible] enz. [illegible] enz. [illegible]

[illegible] enz.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

25 [illegible]

ကိုယ်ရေးရာဆိုင်ရာအခြေအနေများကို ကြည့်ရှုလေ့လာခြင်း၊ ပြုစုစောင့်ရှောက်ခြင်း

ကဲ့သို့ သတ်မှတ်ချိန်ကိုက်ပြီးမှသာလျှင်၊

ကိုးကားခြင်းများ

26 ကိုးကားခြင်းများမှာ-

a. ကိုယ်ရေးရာဆိုင်ရာနှင့်ကိုယ်ခံပစ္စည်းဆိုင်ရာအချက်အလက်များ၊ ပြုစုစောင့်ရှောက်ခြင်းများ၊

b. ကိုယ်ခြေသန့်ရှင်းရေးဆိုင်ရာအချက်အလက်များ၊ ကျန်းမာရေးဆိုင်ရာအကူ (ယောကျ်ားအကူ)

c. ဒိန်ခဲမှုန့်၊

d. ကျွေးကျွေး (အိုးစားခွက်)
e. ရေးရေးကြီး (ရေးဒေါ်)

} စသည်ဖြင့်ဆိုးခြင်းများမရှိရ၊

f. ယင်းသို့ပြောဆိုဆက်ဆံခြင်းများသည် ရေရှည်တွင် ကိုယ်ကျင့်တရားကို ပျက်စီးစေတတ်၏။ ယင်းသို့ပြုမူပြောဆိုခြင်းသည် ကိုယ်ကို မသန့်ရှင်းစေပါ။ ဤသို့ပြုမူပြောဆိုခြင်းသည် ဘုရားသခင်ကို ဂုဏ်ရှိုးစေ၏။

ကိုယ်ဝိညာဉ်

27 ကျွန်ုပ်တို့သည် ကိုယ်ဝိညာဉ်ရှိသည်။ ကိုယ်ဝိညာဉ်သည် ကောင်းသော်လည်းကောင်း၊ ကောင်းမှုမပြုသော်လည်းကောင်း ဖြစ်တတ်သည်။ ကိုယ်ဝိညာဉ်ကို ကျွန်ုပ်တို့ မမြင်နိုင်ကြပါ။

" ဧဝံဂေလိ " ဟုဆိုသည်။

ကိုယ်ဝိညာဉ်ကို အကဲဖြတ်ပါ-

a. ကောင်း၊ ကျိုးကြောင်းဆီလျော်သည်ဟု ယူဆရသော်လည်း ကိုယ်ဝိညာဉ်ကောင်းသည်ဟု မဆိုနိုင်ပါ။ ဥပမာ- ဆရာတော်ကြီးများ၊ ဆရာကြီးများ၊ ဆရာများ၊

[illegible]

b. [illegible]

c. [illegible]

d. [illegible]

e. [illegible] [1])

[illegible]

28 [illegible]

[illegible]

" [illegible] " [illegible]

" [illegible] " [illegible]

[illegible]

[illegible]

[1]) [illegible]

[illegible]

[illegible]

29 [illegible]

a. [illegible] 2 [illegible]

b. [illegible]

c. [illegible] (zie a) [illegible] (zie b) [illegible]

[illegible]

d. [illegible]

[illegible]

ಅಂತ್ಯಾಕ್ಷರ ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಸಂಧಿಕಾರ್ಯವಾಗುವ ಪದಗಳಲ್ಲಿ ಮೊದಲನೆಯ ಪದದ ಅಂತ್ಯಾಕ್ಷರವು ಸ್ವರವಾಗಿದ್ದರೆ ಆ ಸ್ವರವು ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಲೋಪವಾಗುವುದು. ಆ ಸ್ವರವು ಲೋಪವಾಗಿ ಉಳಿದ ಪದಗಳು ಸೇರಿ ಸಂಧಿಯಾಗುವುದು. ಆ ಸ್ವರವು ಲೋಪವಾಗಿ ಉಳಿದ ಪದಗಳು ಸೇರಿ ಸಂಧಿಯಾಗುವುದು.

ಸಂಧಿಯಲ್ಲಿ ಲೋಪವಾಗುವ ಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ಅ, ಆ, ಇ, ಈ, ಉ, ಊ, ಎ, ಏ, ಒ, ಓ ಎಂಬ ಹತ್ತು ಸ್ವರಗಳಲ್ಲಿ ಅ, ಇ, ಉ ಎಂಬ ಮೂರು ಸ್ವರಗಳು ಲೋಪವಾಗುವುದು ಹೆಚ್ಚು. ಆ, ಈ, ಊ, ಎ, ಏ, ಒ, ಓ ಎಂಬ ಏಳು ಸ್ವರಗಳು ಲೋಪವಾಗುವುದು ಕಡಿಮೆ. ಅ, ಇ, ಉ ಎಂಬ ಮೂರು ಸ್ವರಗಳು ಲೋಪವಾಗುವುದು ಹೆಚ್ಚಾಗಿ ಸಂಸ್ಕೃತ ಪದಗಳಲ್ಲಿ

h. [illegible] [illegible] [illegible]

l. ... (= ...)

... (= ...) ... ...

... ...

[illegible]

b. [illegible] J. Z. I. 141. 8. [illegible]

c. [illegible]

d. [illegible]

é. [illegible]

31 [illegible]

1° [illegible]
2° [illegible]

3° [illegible]

4° " [illegible]

5° [illegible] (1) [illegible]

6° [illegible]

(1) [illegible]

7° [illegible]

8° " [illegible]

[illegible]

32 [illegible]

a. [illegible] [1])

b. [illegible]

c. [illegible]

d. [illegible]

[1]) [illegible]

ه. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

و. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

ز. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

ح. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

ط. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

ي. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

يا. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

يب. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

يج. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

يد. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا مدمنا للولد ولا مدمنا للزوجة ولا مدمنا للقريب ولا مدمنا للبعيد ولا مدمنا للغريب ولا مدمنا للمسافر ولا مدمنا للمقيم ولا مدمنا للحاضر ولا مدمنا للبادي ولا مدمنا للقروي ولا مدمنا للمدني ولا مدمنا للعربي ولا مدمنا للعجمي ولا مدمنا للأبيض ولا مدمنا للأسود ولا مدمنا للأحمر ولا مدمنا للأصفر ولا مدمنا للأزرق ولا مدمنا للأخضر ولا مدمنا للأشقر ولا مدمنا للأسمر ولا مدمنا للأدكن ولا مدمنا للأشهب ولا مدمنا للأكحل ولا مدمنا للأعسر ولا مدمنا للأيسر ولا مدمنا للأيمن ولا مدمنا للأعرج ولا مدمنا للأحدب ولا مدمنا للأقرع ولا مدمنا للأصلع ولا مدمنا للأشيب ولا مدمنا للأمرد ولا مدمنا للأغلف ولا مدمنا للأقلف ولا مدمنا للأبتر ولا مدمنا للأجذم ولا مدمنا للأبرص ولا مدمنا للأكمه ولا مدمنا للأعمش ولا مدمنا للأحول ولا مدمنا للأعور ولا مدمنا للأخفش

يه. ولا يجوز أن يكون الشاهد أعمى ولا أخرس ولا أصم ولا مغفلا ولا مجنونا ولا مدمنا للخمر ولا مدمنا للقمار ولا مدمنا للزنا ولا مدمنا للسرقة ولا مدمنا للكذب ولا مدمنا للغيبة ولا مدمنا للنميمة ولا مدمنا للحسد ولا مدمنا للبغضاء ولا مدمنا للشحناء ولا مدمنا للعداوة ولا مدمنا للظلم ولا مدمنا للعدوان ولا مدمنا للإثم ولا مدمنا للفجور ولا مدمنا للفسوق ولا مدمنا للعصيان ولا مدمنا للمعصية ولا مدمنا للخطيئة ولا مدمنا للذنب ولا مدمنا للكبيرة ولا مدمنا للصغيرة ولا مدمنا للمحرمات ولا مدمنا للمكروهات ولا مدمنا للشبهات ولا مدمنا للمباحات ولا مدمنا للمندوبات ولا مدمنا للواجبات ولا مدمنا للفرائض ولا مدمنا للسنن ولا مدمنا للنوافل ولا مدمنا للرغائب ولا مدمنا للمستحبات ولا مدمنا للآداب ولا مدمنا للأخلاق ولا مدمنا للمروءة ولا مدمنا للحياء ولا مدمنا للعفة ولا مدمنا للورع ولا مدمنا للتقوى ولا مدمنا للزهد ولا مدمنا للعبادة ولا مدمنا للطاعة ولا مدمنا للإخلاص ولا مدمنا للتوكل ولا مدمنا للرضا ولا مدمنا للصبر ولا مدمنا للشكر ولا مدمنا للحمد ولا مدمنا للتسبيح ولا مدمنا للتهليل ولا مدمنا للتكبير ولا مدمنا للتحميد ولا مدمنا للتمجيد ولا مدمنا للتقديس ولا مدمنا للتعظيم ولا مدمنا للإجلال ولا مدمنا للإكرام ولا مدمنا للإحسان ولا مدمنا للبر ولا مدمنا للصلة ولا مدمنا للرحم ولا مدمنا للجار ولا مدمنا للصاحب ولا مدمنا للرفيق ولا مدمنا للأخ ولا مدمنا للأب ولا مدمنا للأم ولا

(1) ... = ...

ཕྱག་མཚན་ཕྱག་རྒྱ། ཕྱག་མཚན་ཕྱག་རྒྱ། ཕྱག་མཚན་ཕྱག་རྒྱ།

ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ།

།ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ།

ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ།

།ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ།

།ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ།

།ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ། ཡིག་མཚན་ཐུགས་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ།

||ಸಂಧಿಪರ್ವ : 10||

*) || ಇದಕ್ಕೆ ಮೊದಲು ಇರುವ ಪದ್ಯಗಳು ಮೈಸೂರು ಆವೃತ್ತಿಯಲ್ಲಿ (ed. Meinsma) p: 115. ಇರುವ ಪದ್ಯಗಳಿಗಿಂತ ಭಿನ್ನವಾಗಿವೆ.

|| ಅಷ್ಟಾಂಗಿಕಮಾರ್ಗ || ಮೊದಲನೆಯದಾಗಿ ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞಾನ, ಎರಡನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ದರ್ಶನ, ಮೂರನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ಚಾರಿತ್ರ, ನಾಲ್ಕನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ತಪ, ಐದನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ವೀರ್ಯ, ಆರನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ಸಮಾಧಿ, ಏಳನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ಸಮಯ, ಎಂಟನೆಯದು ಸಮ್ಯಕ್ಸಮಿತಿ ಎಂಬ ಈ ಎಂಟು ಅಂಗಗಳಿಂದ ಕೂಡಿದ ಮಾರ್ಗವು ಮೋಕ್ಷಕ್ಕೆ ಸಾಧನವಾಗಿರುವುದು. ಈ ಅಷ್ಟಾಂಗಿಕಮಾರ್ಗವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯುವವರು ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯುವರು. ಈ ಅಷ್ಟಾಂಗಿಕಮಾರ್ಗವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯದವರು ಮೋಕ್ಷವನ್ನು ಪಡೆಯಲಾರರು. ಆದ್ದರಿಂದ ಈ ಅಷ್ಟಾಂಗಿಕಮಾರ್ಗವನ್ನು ಅನುಸರಿಸಿ ನಡೆಯಬೇಕು.

|| ಅಷ್ಟಾಂಗಿಕಮಾರ್ಗದ ಮೊದಲನೆಯ ಅಂಗವಾದ ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞಾನದ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ಹೇಳುವೆವು. ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞಾನವೆಂದರೆ ಜೀವಾದಿ ತತ್ವಗಳನ್ನು ಸಂಶಯ, ವಿಪರ್ಯಯ, ಅನಧ್ಯವಸಾಯಗಳಿಲ್ಲದೆ ಯಥಾರ್ಥವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು. ಅಂತಹ ಸಮ್ಯಕ್ಜ್ಞಾನವು ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ, ಅನುಮಾನ, ಆಗಮ ಎಂಬ ಮೂರು ಪ್ರಮಾಣಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರತ್ಯಕ್ಷಪ್ರಮಾಣವು ಇಂದ್ರಿಯಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಮತ್ತು ನೋಇಂದ್ರಿಯಪ್ರತ್ಯಕ್ಷ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಇಂದ್ರಿಯಪ್ರತ್ಯಕ್ಷವು ಸ್ಪರ್ಶನ, ರಸನ, ಘ್ರಾಣ, ಚಕ್ಷು, ಶ್ರೋತ್ರ ಎಂಬ ಐದು ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ಪರ್ಶನೇಂದ್ರಿಯವು ಸ್ಪರ್ಶವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು. ರಸನೇಂದ್ರಿಯವು ರಸವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಘ್ರಾಣೇಂದ್ರಿಯವು ಗಂಧವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಚಕ್ಷುರಿಂದ್ರಿಯವು ವರ್ಣವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಶ್ರೋತ್ರೇಂದ್ರಿಯವು ಶಬ್ದವನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಈ ಐದು ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವ ಜ್ಞಾನವು ಮತಿಜ್ಞಾನವೆನಿಸುವುದು. ಮತಿಜ್ಞಾನವು ಅವಗ್ರಹ, ಈಹಾ, ಅವಾಯ, ಧಾರಣಾ ಎಂದು ನಾಲ್ಕು ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಅವಗ್ರಹವು ವ್ಯಂಜನಾವಗ್ರಹ ಮತ್ತು ಅರ್ಥಾವಗ್ರಹ ಎಂದು ಎರಡು ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ವ್ಯಂಜನಾವಗ್ರಹವು ಚಕ್ಷು ಮತ್ತು ಮನಸ್ಸುಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗದೆ ಉಳಿದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಅರ್ಥಾವಗ್ರಹವು ಚಕ್ಷು, ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಉಳಿದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು. ಈಹಾ, ಅವಾಯ, ಧಾರಣಾ ಎಂಬ ಮೂರು ಜ್ಞಾನಗಳು ಚಕ್ಷು, ಮನಸ್ಸು ಮತ್ತು ಉಳಿದ ಇಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುವು. ಈ ಮತಿಜ್ಞಾನವು ಅವಗ್ರಹಾದಿ ಭೇದಗಳಿಂದ ಒಟ್ಟು ಮೂವತ್ತಾರು ವಿಧವಾಗಿರುವುದು. ಮತಿಜ್ಞಾನವು ಬಹು, ಬಹುವಿಧ, ಕ್ಷಿಪ್ರ, ಅನಿಶ್ರಿತ, ಅಸಂದಿಗ್ಧ, ಧ್ರುವ ಎಂಬ ಆರು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು. ಮತಿಜ್ಞಾನವು ಬಹು, ಬಹುವಿಧ, ಕ್ಷಿಪ್ರ, ಅನಿಶ್ರಿತ, ಅಸಂದಿಗ್ಧ, ಧ್ರುವ ಎಂಬ ಆರು ವಿಷಯಗಳನ್ನು ಗ್ರಹಿಸುವುದು.

|| ಅವಿಚ್ಛಿನ್ನವಾಗಿ ಪದಾರ್ಥಗಳನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದು.

|| ಅಂತಃಕರಣದಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು.

|| ಅನಿಂದ್ರಿಯಗಳಿಂದ ಉಂಟಾಗುವುದು.

|| ಮೊದಲು ಅಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿದು ನಂತರ ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು. ಅದು ಅವಗ್ರಹ ಮತಿಜ್ಞಾನವೆನಿಸುವುದು. ಅವಗ್ರಹದಿಂದ ತಿಳಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ಮತ್ತಷ್ಟು ತಿಳಿಯಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವುದು ಈಹಾ ಮತಿಜ್ಞಾನವೆನಿಸುವುದು. ಈಹಾದಿಂದ ತಿಳಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣವಾಗಿ ತಿಳಿಯುವುದು ಅವಾಯ ಮತಿಜ್ಞಾನವೆನಿಸುವುದು. ಅವಾಯದಿಂದ ತಿಳಿದ ವಿಷಯವನ್ನು ಮರೆಯದಂತೆ ಇಟ್ಟುಕೊಳ್ಳುವುದು ಧಾರಣಾ ಮತಿಜ್ಞಾನವೆನಿಸುವುದು.

Alphabetisch register.

ꦲꦏꦱꦫꦗꦶꦠ꧀ . . . § 25.
ꦲꦶꦏꦺꦴꦤ꧀ . . . . . » 4.
ꦲꦶꦏꦺꦴ . . . . . » 18.
ꦲꦏꦱꦫ ꦲꦱꦭꦶ . . » 33.
» ꦲꦏꦱꦫꦗꦶ . . » 28.
» ꦲꦏꦱꦫꦏꦺꦴꦤ꧀ . » 5.
» ꦲꦱꦭꦶ . . . » 31.
» ꦲꦤꦏꦶ . . . » 20.
» ꦲꦤꦸꦱꦲꦠꦶ » 32.
ꦄꦔꦫꦄꦔꦫ . . . . . » 14.
ꦄꦤꦏꦄꦤ . . . . . » 19.
ꦄꦱꦄꦱ . . . . . » 10.
ꦄꦱꦩꦲꦩꦱꦭꦶ . . . » 30.
ꦄꦱꦶꦄꦱ . . . . . » 24.
ꦄꦩ . . . . . » 12.
ꦄꦩꦶ : ꦲꦩꦶꦄꦱꦄꦱ . . » 1.
ꦄꦭꦶꦄꦱ . . . . . » 27.
ꦄꦶꦤ . . . . . § 3.
ꦄꦶꦂꦩ꧀ . . . . . » 21.
ꦄꦭꦺꦴꦄꦱ . . . . . » 2.
ꦄꦮꦩꦄꦱ . . . . . » 16.
ꦄꦫꦗꦫꦄꦩꦶ . . . . . » 7.
ꦄꦭꦗꦲꦠꦫꦭ . . . » 23.
ꦄꦠꦺꦴꦤꦄꦱ . . . . . » 22.
ꦄꦏ꧀ . . . . . » 9.
ꦄꦠꦺꦴ . . . . . » 15.
ꦄꦤ꧀ . . . . . » 13.
ꦄꦩꦭꦄꦩ . . . . . » 6.
ꦄꦤꦠꦶꦠꦲꦠꦫꦭ . . . » 26.
ꦄꦤꦄꦱ . . . . . » 11.
ꦄꦤꦭꦄꦱ . . . . . » 17.
ꦄꦤꦠꦺꦴꦄꦱ . . . . . » 29.
ꦄꦠꦫꦄꦩꦄꦱ . . . . » 8.

48

VERKORTINGEN.

J. Z. I. = Javaansche Zamenspraken.
K. = Krama.
K. N. = Krama Ngoko.
M. L. = Ménak Larė.
N. = Ngoko.
T. Tj. = Tatatjara.

KAWROEH KALAPA

DOOR

KI PADMA SOESASTRA

TE

SOERAKARTA.

MU
DEW
PERPU
Museum Dew
Bb

Semarang-Drukkerij en Boekhandel
H. A. J. Benjamins, Semarang.
1912.